

## हनुमना तहसील (जिला रीवा) में ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं वर्तमान कृषि नियोजन : एक भौगोलिक अध्ययन



**इन्द्रेश कुमार द्विवेदी**

अतिथि व्याख्याता,  
भूगोल विभाग,  
शास. टी.आर.एस. कालेज,  
रीवा, म.प्र.



**एस.पी. पाण्डेय**

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,  
भूगोल विभाग,  
शास. टी.आर.एस. कालेज,  
रीवा, म.प्र.

### सारांश

ग्रामीण अर्थव्यवस्था आधुनिक अर्थव्यवस्था की भांति न तो संगठित है और न ही निश्चित रूप से नियोजित तथा विशिष्ट रूप से नियंत्रित है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रतियोगिता रहित अर्थव्यवस्था है। यहाँ उत्पादक और उपभोक्ता का अस्तित्व अलग-अलग नहीं हैं। प्राकृतिक परिस्थितियों इनके जीवन को पूर्णतः प्रभावित करती है। वर्तमान समय में सामाजिक एवं आर्थिक विकास सुरक्षा एवं राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सूक्ष्म स्तरीय नियोजन द्वारा सीमित संसाधनों की खोज करके उच्च तकनीकी एवं प्रशिक्षण द्वारा अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना जिसमें कृषि विकास द्वारा जो ग्रामीण विकास हो रहा है उस पर विशेष ध्यान एवं बल दिया गया है। अध्ययन क्षेत्र की समस्याओं के समाधान हेतु नहीं बल्कि निराकरण के लिये भी प्रयोग में लाया जा रहा है।

**मुख्य शब्द** : ग्रामीण विकास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्रस्तावना

ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का सुदृढीकरण ही ग्रामीण विकास को अग्रसर कर सकता है। कृषि इस अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। ग्रामीण विकास के लिए समन्वय भी एक विधि है जिसका मुख्य बिन्दु ग्रामीण क्षेत्र है जिसमें बहुउद्देश्यीय नियोजन कार्यों के साथ-साथ क्रियान्वयन की भी आवश्यकता रहती है। इसके अंतर्गत अर्थतंत्र को तीन प्रमुख खण्डों जैसे-कृषि उद्योग और सेवा को संबंधित किया जाता है। इसके साथ ही विकास के आर्थिक, सामाजिक, संस्थानिक और संगठनात्मक प्रश्नों पर ध्यान दिया जाता है और सभी क्रियाकलापों का समय एवं क्षेत्र के विकास से संबंध स्थापित करना है। इसके लिए भिन्न-भिन्न अभिमत व्यक्ति किये गये हैं। भारत में ग्रामीण विकास कार्यक्रम को वर्ष 1976-77 में प्रारंभ किया गया है। निरंतर आर्थिक विकास में वृद्धि के लिए सूक्ष्म स्तर पर प्रयास किया गया। ग्रामीण विकास की कुंजी कृषिगत उत्पादकता की अभिवृद्धि में है जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ कृषकों की आर्थिक दशा सुदृढ एवं मजबूत होती है। अतः किसी अध्ययन क्षेत्र की मौजूदा ग्रामीण आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए सूक्ष्म स्तर पर उसके नियोजन की आवश्यकता है। हनुमना तहसील का क्षेत्र कृषि एवं उद्योगों की दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां प्रतिव्यक्ति आय बहुत कम है साथ ही विकास योजना और कार्यक्रम को स्थानीय शासन द्वारा समुचित ढंग से लागू नहीं किया गया है, जबकि 1970 के उपरांत अनेक विकासशील योजनाओं द्वारा इस क्षेत्र में संतुलित ग्रामीण विकास को नया स्वरूप प्रदान करना वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसका कारण यह है कि ग्रामीण समुदाय को विकास की प्रक्रिया से जोड़ें बिना अथवा उसके आत्मविश्वास जगाए बिना समुचित सफलताएँ प्राप्त नहीं हो सकती हैं।

### शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. कृषकों को कृषि की नवीन पद्धतियों के बारे में जानकारी देकर उनको नवीन पद्धति से कृषि करने के लिए प्रेरित करना।
2. कृषि के विकास की सम्भावनाओं पर प्रकाश डालना जिससे लोग कृषि को सिर्फ जीविका का आधार ही न समझें बल्कि इस बात से भी अवगत हों।
3. अधिकतम वैज्ञानिक पद्धतियों से कृषि की जाय जिससे इस क्षेत्र के लोगों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि बन जाय एवं जीवन-स्तर को उठाने में सहायक बन सके।
4. कृषि द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ग्रामीण विकास से जुड़कर यहाँ के आर्थिक और सामाजिक स्तर को ऊपर उठाया जा सके।

**भौगोलिक परिचय**

हनुमना तहसील मुख्यरूप से रीवा जिले की एक तहसील है जो अर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़ी अवस्था में है। इस तहसील का सम्पूर्ण क्षेत्र ग्लोब पर 24°34' उत्तरी अक्षांश से 24°51' उत्तरी अक्षांश तथा 81°55' पूर्वी देशान्तर से 82°20' पूर्वी देशान्तर के बीच फैला है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 960 वर्ग किलोमीटर है तथा जनसंख्या (2011) के अनुसार 254882 है। तहसील के मध्य भाग से देश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग 07 गुजरता है। यह मध्यप्रदेश की सीमावर्ती तहसील भी है। हनुमना तहसील मुख्यालय से एक किलोमीटर पूर्व में उत्तर प्रदेश की सीमा मिलती है। इसका धरातलीय स्वरूप पहाड़ी एवं पठारी है। भूमि का ज्यादातर भाग पथरीला एवं लाल-पीली मिट्टी वाला है।

अध्ययन क्षेत्र हनुमना तहसील में कुल 290 गाँव, 52 पटवारी हल्का, 3 राजस्व निरीक्षक मण्डल, 57962 मकान तथा कुल जनसंख्या 254882 है। क्षेत्रीय विकास के मापन के लिये उससे संबंधित सभी पक्षों का विकास आवश्यक है। अतः यह कहा जा सकता है कि किसी भी क्षेत्र का विकास तभी संभव हो सकता है जब वहाँ समन्वित विकास हो सके जैसे-कृषि विकास- इसमें नवीनतम कृषि यंत्रों का उपयोग, उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग, रासायनिक खाद की जगह जैविक खाद का उपयोग, तकनीकी कृषि, निर्वहन की जगह व्यवसायिक कृषि वैज्ञानिक कृषि उपकरण आदि को उपयोग में लाया जाय। इसके साथ-साथ फसल बीमा, दुग्ध व्यवसाय, ग्रामीण गोदाम, मत्स्य पालन, क्रेडिट कार्ड आदि का प्रोत्साहन सरलता से हो इनके उपयोग एवं विकास से ग्रामीण क्षेत्र का समुचित विकास संभव होगा। अतः विकास ग्रामीण क्षेत्र के विकास का एक सरलीकृत मापक है।

**विश्लेषण**

भारतीय किसान अतीत में कृषि पंडित के रूप में विख्यात था। वर्तमान समय में कृषि का वैज्ञानिकरण हो गया है लेकिन भारतीय किसान अभी तक पूरी तरह नयी तकनीकी व ज्ञान का लाभ नहीं उठा सका है। धीरे-धीरे इस दिशा में कार्य एवं निरंतर प्रगति हो रही है। अध्ययन क्षेत्र भी कृषि आधारित क्षेत्र है। यहाँ की अर्थव्यवस्था 70 प्रतिशत से ज्यादा कृषि पर निर्भर है। यहाँ 70 से 75 प्रतिशत लोग आज भी कृषि कार्य में संलग्न हैं। यहाँ की कृषि व्यवस्था आज भी पूँजी के आभाव, तकनीकी ज्ञान की कमी एवं आधुनिक कृषि संसाधनों की उपलब्धता की कमी के कारण ही बहुत पिछड़ी हुई अवस्था में है। यहाँ कृषि का बहुत मन्द गति से विकास हो रहा है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में तो अभी भी 70 प्रतिशत कार्य पुरानी पद्धतियों के ही देखने को मिलते हैं।

**फसलों का उत्पादन एवं वितरण**

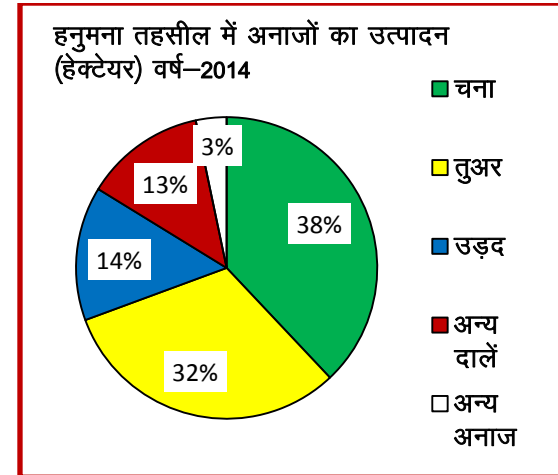
अध्ययन क्षेत्र के हर तरफ अनाजों का उत्पादन किया जाता है। उनके वितरण की स्थिति असमान है। जहाँ भूमि समतल एवं मैदानी है, वहाँ अनाजों का उत्पादन ज्यादा तथा जहाँ पहाड़ी ऊँच-नीच है वहाँ उत्पादन कम होता है। वहाँ अनाजों को निजी उपयोग एवं व्यापार दोनों के लिए किया जाता है। अनाजों का उत्पादन सारणी के माध्यम से गया है।

**सारणी क्रमांक- 1.0****हनुमना तहसील में अनाजों का उत्पादन (हेक्टेयर) वर्ष-2014**

क्रमांक	फसलों के नाम	उत्पादन क्षेत्र (हेक्ट.)	प्रतिशत
1.	चावल	24826	53.87
2.	गेहूँ	17017	36.93
3.	ज्वार	1575	3.41
4.	मक्का	1088	2.36
5.	अन्य अनाज	1571	3.40
<b>योग</b>		<b>46077</b>	<b>100.0</b>

**स्रोत- अधीक्षक भू-अभिलेख रीवा (म.प्र.)**

उक्त सारणी में वर्ष 2014 में अनाजों का उत्पादन एवं वितरण से स्पष्ट होता है कि हनुमना तहसील में मुख्य उत्पादित की जाने वाली फसलें धान, गेहूँ, ज्वार, मक्का तथा अन्य अनाज हैं जिसका उत्पादन तहसील के लगभग सभी गाँवों में किया जाता है। फसलों के उत्पादन एवं वितरण दिया जा रहा है।



अध्ययन क्षेत्र में धान के उत्पादक क्षेत्र के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि तहसील के अधिकांश क्षेत्र में धान का उत्पादन किया जाता है। जो कि 90 से 95 प्रतिशत मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती है। अगर वर्षा अच्छी हुई तो धान का उत्पादन हो जाता है सिंचाई के अभाव में यहाँ उत्तम किस्म के धान का उत्पादन नहीं होता है। सिर्फ मध्यम या कम दिनों में पकने वाली बौनी किस्म की धान का उत्पादन किया जाता है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यहाँ सर्वाधिक क्षेत्र में धान की फसल 24826 हेक्टेयर में बुवाई की जाती है, जो कुल उत्पादन का 53.8 प्रतिशत है। गोरमा परियोजना के कारण यहाँ धान उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि हुयी है। हनुमना तहसील के उत्तरी एवं मध्यवर्ती क्षेत्र में मुख्य रूप से धान का उत्पादन किया जाता है।

गेहूँ रबी की एक प्रमुख फसल है। हरित क्रांति के पश्चात गेहूँ एवं चावल के उत्पादन में वेतहासा वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षेत्र में गेहूँ के अंतर्गत कुल 17017 हेक्टेयर क्षेत्र है जो कुल अनाज उत्पादन क्षेत्र का 36.93 प्रतिशत है। गेहूँ के उत्पादन एवं वितरण को देखा जाय तो यह असमान है जहाँ सिंचाई की समुचित व्यवस्था है

वहाँ गेहूँ का अच्छा उत्पादन हो रहा है परन्तु जहाँ सिंचाई की व्यवस्था नहीं है वहाँ उत्पादन भी कम होता है। क्षेत्र सर्वेक्षण में यह जरूर देखने को मिला है कि पश्चिमी मध्यवर्ती भाग में गेहूँ का ज्यादा उत्पादन होता है जबकि दक्षिणी पूर्वी एवं उत्तरी भाग में गेहूँ का उत्पादन बहुत कम होता है। वर्तमान में लोग उत्तम किस्म के बीजों, रासायनिक खादों का उपयोग कर प्रति हेक्टेयर के उत्पादकता में वृद्धि कर रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र में गौरी, बेलौही, पैपखार, खटखरी आदि गाँवों के गेहूँ का उत्पादन ज्यादा किया जाता है। जबकि बामनगढ़, खोड़मानी, बीरादेई, हाटा, गोपला एवं जड़कुड़ आदि गाँवों में सबसे कम गेहूँ उत्पादित किया जाता है, जिसका कारण भूमि की बनावट, उपजाऊपन की कमी एवं सिंचाई की सुविधा का अभाव है।

ज्वार एवं मक्का दोनों खरीफ की फसलें हैं, जो जून-जुलाई में बोई जाती हैं। अध्ययन क्षेत्र के 1575 हेक्टेयर में ज्वार एवं 1088 हेक्टेयर में मक्का बोया जाता है, जिनका कुल अनाज उत्पादित क्षेत्र से प्रतिशत 3.41 एवं 2.36 है। आज से 20 वर्ष पूर्व में अध्ययन क्षेत्र में सबसे ज्यादा क्षेत्र में इन्हीं दोनों फसलों का उत्पादन किया जाता था, परन्तु दिन प्रतिदिन इन फसलों के अंतर्गत के क्षेत्र में निरंतर कमी होती जा रही है। हरित क्रांति ने इन फसलों के क्षेत्र को कम कर अपना प्रभुत्व बढ़ाती जा रही हैं। हनुमना तहसील में मुख्य रूप से ये फसलें दक्षिणी एवं पूर्वी भाग के गाँवों जैसे- रघुनाथगढ़, जड़कुड़, गोपला, हाटा, बीरादेई, खोड़मानी हरईप्रताप सिंह, सरदमन, बामनगढ़, देवरा आदि गाँवों में ज्वार एवं मक्के का उत्पादन किया जाता है लेकिन कम मात्रा में। इसी प्रकार अन्य अनाजों के उत्पादन क्षेत्र को देखा जाये तो हनुमना तहसील को कुल अनाज उत्पादित क्षेत्र में 1571 हेक्टेयर या 3.40 प्रतिशत क्षेत्र में उत्पादित किया जाता है। कोदो, कुटली, रागी, सामा एवं अन्य खाद्य फसलें हैं। इन फसलों की बुवाई खरीफ के सीजन में यानी जून-जुलाई (प्रथम बरसात) में ही कर दी जाती है।

खाद्यान फसलों में दलहनी फसलों का अपना सदैव से स्थान एवं प्रभुत्व बना रहा है और आज भी मौजूद है। अध्ययन क्षेत्र में दलहन फसलों खरीफ एवं रबी दोनों सीजन में बोई जाती है। क्षेत्र में खरीफ सीजन में तुअर, मूंग एवं उड़द की बुवाई की जाती है जबकि रबी सीजन में चना, मसूर, मटर, मटरी एवं अन्य दलहनी फसलें पैदा की जाती है। हनुमना तहसील में दलहनी फसलों के अंतर्गत सम्मिलित क्षेत्र को सारणी के द्वारा देखा जा सकता है—

#### सारणी क्रमांक- 2.0

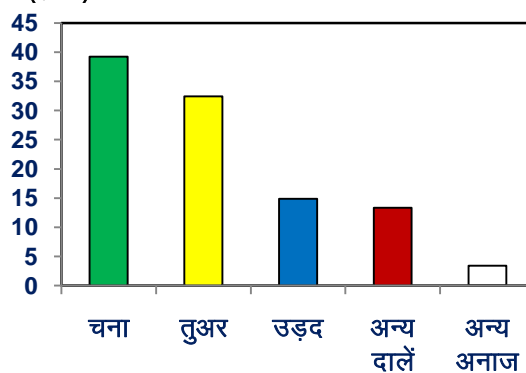
#### हनुमना तहसील में दलहन फसलों का उत्पादन (हेक्टेयर) वर्ष 2014

क्रमांक	फसलों के नाम	उत्पादन (हेक्टेयर)	प्रतिशत
1.	चना	4403	39.26
2.	तुअर	3640	32.46
3.	उड़द	1669	14.88
4.	अन्य दालें	1501	13.38
	योग	11213	100.00

स्रोत— अधीक्षक भूअभिलेख रीवा (म.प्र.)

उक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में दलहन फसलों के अंतर्गत सबसे ज्यादा क्षेत्र में चना का उत्पादन किया जाता है जिसका कुल दलहनी फसलों के क्षेत्र का प्रतिशत 39.26 है। इसके पश्चात तुअर फसल के अंतर्गत कुल 32.46 प्रतिशत क्षेत्र है। यह क्षेत्र सिंचाई की दृष्टि से काफी पिछड़ा है एवं भूमि भी ज्यादा उपजाऊ नहीं है क्योंकि भूमि का ज्यादातर भाग पहाड़ी-पठारी तथा भूमि का रंग लाल एवं पीला है जो अनुर्वर एवं अनुपजाऊ भूमि मानी जाती है। इस प्रकार चना एवं तुअर के बाद उड़द 14.88 प्रतिशत भाग पर अन्य दालें 1501 हेक्टेयर यानी 13.38 प्रतिशत भू-भाग पर बोई जाती है। अध्ययन के दौरान यह देखने को मिला कि यहाँ ज्यादातर भाग में एक फसली कृषि की जाती है अर्थात् खरीफ के सीजन में ज्यादा क्षेत्र में बुवाई की जाती है जबकि रबी सीजन में कम। यह भी देखने को मिला कि सिंचाई की समुचित व्यवस्था न होने के कारण असिंचित फसलों का क्षेत्र ज्यादा है अर्थात् असिंचित फसलें ज्यादा बोई जाती है।

#### हनुमना तहसील में दलहन फसलों का उत्पादन (हेक्टे.) वर्ष-2014



अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान फसलों के अलावा तिलहन फसलों का भी उत्पादन किया जाता है, जिनका उपयोग निजी एवं व्यवसायिक दोनों तरह से किया जाता है। हनुमना तहसील की प्रमुख तिलहन फसलें तिल, अलसी, राई एवं सरसो, सोयाबीन तथा अन्य हैं। राई एवं सरसों रबी की सीजन में बोई जाने वाली फसल है। इसे अकेले एवं विभिन्न फसलों के साथ में जैसे गेहूँ के साथ, चना के साथ, जौ के साथ, अलसी आदि के साथ बोते हैं। अध्ययन क्षेत्र में यह फसल मुख्य रूप से गौरी, बेलौही, पैपखार, खटखरी, नाउनकला, मलैगमों, लासा, पटेहरा, बामनगढ़ आदि गाँवों में बोई जाती है। इन गाँवों के अलावा अन्य सभी गाँवों में कुछ न कुछ मात्रा में यह फसल बोई जाती है। हनुमना तहसील में सोयाबीन का उत्पादन शून्य है क्योंकि यहाँ काली मिट्टी के क्षेत्र का अभाव है। यहाँ लाल-पीली एवं पथरीली पठारी मिट्टी की बहुलता है जिसमें की सोयाबीन का उत्पादन नहीं हो सकता है।

अन्य तिलहन फसलों के अंतर्गत कुल 126 हेक्टेयर क्षेत्र है जो कुल तिलहन उत्पादित क्षेत्र का 2.45 प्रतिशत है। जो तहसील के संपूर्ण भू भाग में पैदा किया

जाता है, परंतु धरातलीय परिस्थितियों कृषि के अनुकूल नहीं हैं जिसके कारण यहाँ के कृषक समृद्धशाली नहीं हैं। अध्ययन क्षेत्र में व्यावसायिक फसलों के उत्पादन के वितरण को देखा जाये तो गौरी, पटेहरा, बेलैही, नाउन कला, नाउन खुर्द, लासा, एवं मलैगवों में ज्यादा उत्पादित की जाती है जबकि गेदुरहट, देवरा, दामोदरगढ़ एवं अर्जुनपुर पैकान में कम मात्रा में व्यावसायिक फसलों का उत्पादन किया जाता है जबकि जड़कुड़, बीरादेई, खोढ़मानी, सरदमन, हाटा, गोपला, बामनगढ़, एवं अन्य दक्षिणी गाँवों में व्यावसायिक फसलों का उत्पादन शून्य रहता है। अगर साग-सब्जी या आम जैसे फलों का उत्पादन भी किया जाता है तो उनका दायरा निजी उपयोग तक सीमित रहता है। क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं प्राप्त आंकड़ों के अनुसार इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अध्ययन क्षेत्र में ज्यादा तर खाद्य फसलों का उत्पादन किया जाता है जिसमें धान, गेहूँ, ज्वार, मक्का तथा दलहन फसलों में तुअर, चना एवं मूग-उड़द आदि हैं, जबकि व्यावसायिक फसलें नहीं के बराबर हैं।

### सिंचित एवं असिंचित फसली क्षेत्र

सिंचाई के श्रोतों का निर्माण एवं उनसे सिंचाई की क्षमता के सृजन की शुरुआत इस शब्दावली के आरम्भ से हुई। प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास को अधिक प्रमुखता नहीं दी गयी। फलतः सिंचाई की सुविधा में बहुत कम वृद्धि हुई है। वास्तव में अगर हरित क्रांति की शुरुआत हुई है तो उसमें सबसे अहम योगदान सिंचाई का ही है। अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं का अभाव है। यहाँ सबसे बड़ी सिंचाई सुविधा गुरमा नदी पर बना गुरमा बाँध है जिससे तहसील के पश्चिमी एवं उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के कुछ भागों में सिंचाई होती है। परन्तु दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग में सिंचाई सुविधाओं का बहुत अभाव पाया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए अध्ययन क्षेत्र की कृषि भूमि को दो खण्डों में बाँट कर अध्ययन किया गया है –

### सिंचित क्षेत्र

सिंचित क्षेत्र से तात्पर्य है कि कृषि योग्य भूमि क्षेत्र में सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो जिससे समय-समय पर कृषि फसलों की सिंचाई कर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सके। सिंचाई के साधनों एवं उनसे सिंचित क्षेत्र तथा कुल सिंचित क्षेत्र का विवरण सारणी के द्वारा व्यक्त किया जा रहा है।

### सारणी क्रमांक – 3.0

#### विभिन्न साधनों से सिंचित क्षेत्र (हेक्टे.), वर्ष- 2014

क्रमांक	सिंचाई के साधन	सिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर)	प्रतिशत
1.	नहरें	4726	58.0
2.	नलकूप	216	2.6
3.	कुएँ	952	11.4
4.	तालाब	57	0.6
5.	अन्य	2212	27.1
	योग	8143	100

स्रोत- संभागीय योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय  
रीवा- 2014

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई के साधनों में मुख्य रूप से नहरें, कुएँ, नलकूप, तालाब एवं छोटे-मोटे साधन हैं जिनसे कृषित भूमि की सिंचाई की जाती है। यहाँ सिंचाई के साधनों में सबसे ज्यादा संख्या कुओं की 201 है जो कुल सिंचाई के साधनों का 57.4 प्रतिशत है। कुओं से कुल 931 हेक्टेयर यानी 11.4 प्रतिशत भूमि की सिंचाई की जाती है। इसके पश्चात् नलकूपों की संख्या 137 है जिनका कुल साधनों से प्रतिशत 39.1 है तथा इनसे कुल 216 हेक्टेयर (2.6 प्रतिशत) भूमि की सिंचाई की जाती है। तहसील में सिंचाई के लिए उपलब्ध तालाबों की संख्या 11 है जो कुल सिंचाई के साधनों का 3.1 प्रतिशत है परन्तु इनमें मात्र 57 हेक्टेयर (0.6 प्रतिशत) भूमि की सिंचाई हो पाती है। अध्ययन क्षेत्र में सबसे कम सिंचाई के साधनों में नहरे हैं जिनकी संख्या मात्र एक है परन्तु सबसे ज्यादा इसी साधन से 4726 हेक्टेयर (58.0 प्रतिशत) भूमि की सिंचाई की जाती है। यह (गुरमा नहर) तहसील के किसानों के लिए जीवन आधार है। इन साधनों के अलावा अन्य साधनों से भी सिंचाई लोग करते हैं। तहसील में 2212 हेक्टेयर भूमि अन्य साधनों से सिंचित होती है। इनमें नदी, नाला, बड़े गड्ढे आदि हैं इनसे भी कृषि फसलों की सिंचाई की जाती है।

सिंचाई के इन साधनों से विभिन्न फसलें जैसे गेहूँ, धान, चना, सब्जियाँ आदि की सिंचाई की जाती है परन्तु गेहूँ एवं धान सर्वोपरि है क्योंकि ये दोनों फसलें बिना सिंचाई के तैयार ही नहीं हो सकती है। अध्ययन क्षेत्र की जमीन भी रुखड है जो जल्द ही सूख जाती है। क्षेत्र सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि क्षेत्र में सबसे ज्यादा कृषि योग्य भूमि हनुमना तहसील मुख्यालय से पश्चिमी एवं उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में विस्तारित है तथा यहीं पर सिंचाई के साधनों का भी विस्तार हुआ है।

### असिंचित क्षेत्र

असिंचित क्षेत्र से तात्पर्य है कृषि का प्रकृति पर पूर्णरूपेण निर्भर रहना। हनुमना तहसील के ज्यादातर कृषक मानसूनी वर्षा पर आश्रित रह कर कृषि करते हैं विशेष रूप से उस क्षेत्र के कृषक जहाँ सिंचाई के साधनों का अभाव पाया गया है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी एवं पूर्वी भाग के गाँवों जैसे खाडेमनी, बीरादेई, हाटा, गोपला, जड़कुड़, लाढी, गेदुरहट, बामनगढ़, सरदमन आदि गाँवों के सिंचाई सुविधाओं का सर्वथा अभाव देखने को मिला। यहाँ के कृषक खरीफ सीजन की फसलों के उत्पादन के लिए मानसूनी वर्षा पर निर्भर रहते हैं जबकि रबी के सीजन में उन्ही फसलों की कृषि करते हैं जो असिंचित होती है।

उक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष हुआ कि सिंचाई सुविधाओं का अभाव इस क्षेत्र के विकास का बहुत बड़ा अवरोध है। सिंचाई के अभाव में यहां के कृषकों की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब है। यहाँ तक कि अगर कृषक सिर्फ कृषि पर ही आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर रहे तो उसका जीवनयापन संभव नहीं होगा।

### व्यावसायिक कृषि उत्पादन

हनुमना तहसील में अभी तक खेती का स्वरूप निर्वहन कृषि का था। किसान कृषि से अपना व अपने

परिवार का पेट भरता था तथा अन्य पारिवारिक व सामाजिक कार्यों की पूर्ति करने का प्रयत्न करता था। उसे कृषि से कोई लाभ नहीं मिलता था। गत 50 वर्षों में कृषि की प्रगति के लिए किए गए प्रयत्नों के फलस्वरूप अब कृषि एक उद्योग का रूप धारण करने की स्थिति में आ गई है। कृषि द्वारा व्यापारिक स्वरूप ग्रहण करने के कुछ संकेत भी स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। जिस प्रकार कोई भी व्यापार, उद्योग आदि लाभ के लिए लगाया जाता है, इसमें पर्याप्त पूँजी लगाई जाती है और कुशल कार्यकर्ताओं, प्रबन्धनों मजदूरों, मशीनों तथा अति आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार अब कृषि में भी पर्याप्त पूँजी लगने लगी है जो किसानों को बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त होती है। कृषि के लिए उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई के साधन, विद्युत उपयोग तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों के द्वारा कृषि उपज बढ़ाने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं। चकबन्दी के द्वारा बड़ी-बड़ी जोतें बनाई जा रही हैं। कृषि उत्पादों के भण्डारण तथा विपणन की उचित व्यवस्था की गई है। कृषि विश्वविद्यालय तथा कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि प्रदर्शन फार्म, डेरी विकास बोर्ड द्वारा किसानों को उचित परामर्श व मार्गदर्शन दिया जाता है। फसलों का समर्थन मूल्य प्रतिवर्ष घोषित किया जाता है।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्ष 2001 से 2011 के बीच में हनुमना तहसील में खाद, बीज, उर्वरक, सिंचाई विस्तार, यंत्रों का एवं उपयोगी फसलों की किस्मत का चयन आदि बातों के द्वारा कृषि का स्वरूप निरन्तर व्यापारिक स्वरूप को प्राप्त करता जा रहा है। इस बात का संकेत निम्न तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है –

1. जमींदारी प्रथा जैसी बिचैलिया पद्धति समाप्त कर लोगों को स्थाई भूमि स्वामित्व प्राप्त हो गया जिससे स्थायी रूप से भूमि सुधार कार्य हुआ। चकबन्दी अपनाकर खेतों का आकार विस्तृत कर दिया जा रहा है।
2. सहकारिता को अपनाकर वित्तीय साधन जुटाना सरल हो गया है। कृषि उपजों का संरक्षण, विपणन, संग्रहण की सुविधा का विकास होता जा रहा है।
3. कृषि अनुसंधान केन्द्र निरन्तर शोध करके इस क्षेत्र की उन्नति में सहयोग कर रहे हैं। कृषि पर आधारित अनेक उद्योग भी विकसित होते जा रहे हैं।
4. सिंचाई सुविधाओं का निरन्तर विकास हो रहा है। समर्थन मूल्य भारतीय खाद्य निगम, सार्वजनिक वितरण प्रणाली आदि सरकारी प्रयासों की अधिकता भी व्यावसायिक कृषि के लिए सहायक है।

#### **कृषि विकास में विद्युत का योगदान**

कृषि विकास विद्युत का महत्वपूर्ण योगदान है, विद्युत एक सस्ता सुलभ विकेंद्रित शक्ति का साधन है। इसे मन चाहे स्थान पर योजनानुसार ले जाया जा सकता है। फलतः कृषि आधारित आर्थिक विकास में विद्युत अहम भूमिका निर्वाहन कर रही है। अध्ययन क्षेत्र में नए ऊर्जा स्रोत के रूप में विद्युत का प्रादुर्भाव बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। सिंचाई पम्पों एवं फसल गहाई हेतु थ्रेशर के संचालन में इसका अधिकाधिक उपयोग किया जाता

है। इसमें ऊर्जा के अन्य साधनों की अपेक्षा 50 से 60 प्रतिशत धन की बचत होती है। इसके विपरीत डीजल, पशु एवं मानव संसाधनों में कई गुना समय एवं धन व्यय करना पड़ता है। जो कृषि उत्पादन की दृष्टि से इस क्षेत्र में अलाभकारी है। वर्तमान में यहाँ औसतन 75 प्रतिशत गेहूँ, 15 प्रतिशत चना एवं 10 प्रतिशत अन्य फसलों की गहाई विद्युत चलित थ्रेशरों से की जाती है। फसत: इस क्षेत्र में कुल उत्पादन के 5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत अनाज के बचत का श्रेय विद्युत शक्ति को है जो कि इसके अभाव में दीमक, चूहों और सड़ने से नष्ट हो जाता था।

#### **कृषि विकास में सहकारी समितियों का योगदान**

सभी व्यावसायिक संस्थानों के लिए वित्त की व्यवस्था परम आवश्यक है और कृषि क्षेत्र इसका अपवाद नहीं है। चूंकि भारतीय कृषक व कृषि की अत्यधिक पिछड़ी हुई स्थिति को देखते हुए समयानुकूल पर्याप्त व सस्ती साख की व्यवस्था कृषि क्षेत्र की प्रगति में महत्वपूर्ण आगत है। विश्व सहकारी आन्दोलन का अवलोकन करने से विदित होता है कि छोटे व निर्धन कृषकों की बचत करने की असमर्थता व निर्धनता के कुचक्र को देखते हुए संस्थात्मक साख का जन्म जर्मनी में हुआ। हनुमना तहसील में सहकारिता का विकास एवं स्थिति की विवेचना से उत्तरीपूर्वी म.प्र. में सहकारी आन्दोलन के विकास और वर्तमान स्थिति पर एक नजर डाल लेना उपयुक्त होगा। म.प्र. में सहकारी आन्दोलन का उदय भारत में सहकारी आन्दोलन के साथ ही हुआ तथा इसी तारतम्य में रीवा पठार में भी सहकारी समितियों का गठन हुआ। सहकारी अधिनियम 1904 के तहत म.प्र. के सेन्ट्रल प्राविन्स एवं बाहर प्रान्त के होशंगाबाद के देव पिपरिया में प्रथम कृषि साख सहकारी समिति का गठन किया गया। 1 नवम्बर 1956 में स्थापित नवीन म.प्र. की पंचवर्षीय योजना में चूंकि सहकारी आन्दोलन को सामिल कर लिया गया था। इसलिए सम्पूर्ण राज्य में सहकारी आन्दोलन के एकीकरण के लिए ठोस कदम उठाए गए। एकीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत सर्वप्रथम म.प्र. सहकारी समिति अधिनियम 1960 पारित किया गया तथा म.प्र. सहकारी समिति नियम 1962 बनाए गए। इस विधान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सहकारी संस्थाओं का गठन, पंजियन, निरीक्षण, अंकेक्षण एवं पर्यवेक्षण किया जाने लगा। अध्ययन क्षेत्र में कृषकों को साहूकारों के ऋण जाल से मुक्त कराने उन्हें कृषि कार्य के लिए साख की सुविधा उपलब्ध कराने तथा कृषकों एवं कमजोर वर्ग के लिए सामाजिक आर्थिक उन्नयन में सहकारी समितियों की स्थापना की गई।

#### **निष्कर्ष**

इस भौगोलिक क्षेत्र में भूमि सुधार, ग्रामीण क्षेत्रों के औद्योगीकरण, अवस्थापन सुविधाओं का सुदृढ़ जाल, संसाधन विकास, बुनियादी सुविधाओं का विकास, ग्रामीण दबाव में कमी लाना, ग्रामीण क्षेत्र के प्रभाव का समुचित प्रबंधन, ग्रामीण विकास के विभिन्न घटकों में समन्वयन जिसमें खण्डीय समन्वय, स्थानिक समन्वय, सामाजिक संस्थात्मक समन्वय, तकनीकी परिस्थितिकीय समन्वय, उद्देश्य मूलक क्रियाओं में समन्वय आदि ग्रामीण विकास के सरलीकृत मापक हैं जिन्हें अपनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है। इसी प्रकार क्षेत्रीय

संश्लिष्टों का सृजन, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, नकद ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम, सामाजिक ग्रामीण ऊर्जा कार्यक्रम, स्वरोजगार हेतु ग्रामीण नवयुवको को प्रशिक्षण, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, इन्दिरा आवास योजना का क्रियान्वयन आदि ऐसे कार्यक्रम हैं जिनके क्रियान्वयन से ग्रामीण क्षेत्र का विकास हो सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि हनुमना तहसील के संपूर्ण क्षेत्र के विकास के सरलीकृत मापक उपरोक्त बिन्दु हैं जिनके क्रियान्वयन एवं व्यवस्थित संचालन से तहसील के ग्रामीण क्षेत्र के विकास का एक नया व्यवस्थित स्वरूप देखने को मिल सकता है।

#### **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. कुमार प्रमिला, म.प्र. एक भौगोलिक अध्ययन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 59.
2. बंशल, एस.सी. भारत का वृहद भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, पृ. 286.
3. Bhatia, S.S. patterns of crop concentration and diversification in India, *Economic Geography*, 41(1965) 39-65
4. तिवारी आर.सी. कृषि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
5. नायक शशि किरण, मध्यप्रदेश में खाद्य वानिकी पृष्ठ 93
6. Singh, J. *Agricultural Geography*, Second, ed. Tata Mc Graw Hill Publication Co. New Delhi.